KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A7 PAGE NO.24-26
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

[1]**Dr. SANJEET**
[1]Lecturer in History, G.S.S.S. Baniyani (Rohtak)

शोध आलेख सार
स्वामी विवेकानन्द, भारत की महान आत्मा थे जिनके प्रति वर्तमान पीढ़ी ऋणी है और भावी पीढ़ी सदैव ऋणी रहेगी। उन्होंने पूर्व एवं पश्चिम की संस्कृतियों के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय करने का प्रयास किया। विदेशों में भारतीय संस्कृति की महानता को, धर्म के सार्वदेशिक स्वरूप को उन्होंने स्पष्ट और तार्किक रूप में रखा। विवेकानन्द भारतीय राष्ट्रीयता के एक महान पुरोधा थे तथा मानव कल्याण, व्यक्ति के आत्मविश्वास व गौरव की प्रेरणा देने वाले थे। स्वामी जी ने विश्व संसद में भाग लेकर भारतीय संस्कृति का विश्व में लोहा मनवाया और वहां उपस्थित सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

मूलशब्द– *पश्चिम संस्कृति, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता, मानव कल्याण, धर्म संसद ।*

भूमिका

वस्तुतः स्वामी विवेकानन्द जिनका पहला नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था, स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। उनकी मृत्यु के बाद उन्होंने उनकी निःस्वार्थ ईश्वर भक्ति आदि शिक्षाओं का प्रचार प्रस्तुत किया।सन् 1893 ई0 में शिकागो में हुई 'धर्मों की संसद' भाग लिया तथा उसमें भारतीस वैदिक हिन्दू संस्कृति की महानता का वर्णन किया जिसमें भौतिकवाद व अध्यात्मवाद के बीच स्वस्थ संतुलन पर बल दिया। वेदांत समाज की स्थापना की, भारत में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य लोकसेवा व समाज सुधार करना था। जिसके केन्द्र वर्तमान समय में भी शिक्षा, स्वास्थ्य व लोकसेवा के कार्य कर रहे हैं।

विवेकानन्द का सामाजिक दर्शन

स्वामी विवेकानन्द एक ऐसे मान्यतावादी चिन्तक हुए हैं जिन्होंने मनुष्य के रूप में ईश्वर की पहचान की तथा मानव प्रेम तथा उपासना के माध्यम से राष्ट्र सेवा का बीड़ा उठाया। वास्तव में उनकी एकता की अवधारणा उनके समूचे समाजवाद तथा मानवतावाद को प्रोत्साहित करती रही और उन्होंने मानव जीवन का आरम्भ समानता के दर्शन में बताया जो वैश्विक एकता की प्राप्ति में जाकर पूर्ण रूप ग्रहण करता था। वे हर प्रकार के विशेषाधिकार तथा सामाजिक शोषण के खिलाफ थे। उनका मानना था कि समाज में हर प्रकार का शोषण असमानता के कारण ही उत्पन्न होता है। वास्तव में उनकी समानता की विचारधारा ही उनके समूचे आध्यात्मिक दर्शन का आधार है जो व्यक्ति के क्रमिक विकास को प्रोत्साहित करती है। समानता से स्वामी जी का अभिप्रायः सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक अथवा किसी अन्य प्रकार की विशेष असमानता से नहीं था बल्कि उसकी प्रक्रिया से था।[1] स्वामी जी का मानना था कि विश्व में समानता और असमानता एक साथ चलती हैं तथा समानता की तरह असमानता का होना भी स्वाभाविक, लाभदायक तथा सृजनात्मक होता है, परन्तु समाज में असमानता न तो सनातन है और न ही असीम। उन्होंने व्यक्ति की असमानता के विरूद्ध संघर्ष की अनिवार्यता तथा इच्छा को उचित बताया। उनका मानव अनेकता में विश्वास सांख्य दर्शन के सिद्धान्त पर आधारित था जबकि वेदान्त में उनकी आस्था ने उन्हें मानव एकता की घोषणा के लिए प्रेरित किया। उनका कहना है कि समाजिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतन्त्रता समानता पर ही आधारित होती है। आध्यात्मिक दृष्टि से उन्होंने व्यक्ति की स्वतन्त्रता को सबसे अधिक मूल्यवान बताया है। उन्होंने स्वतन्त्रता को मानव विकास की अनिवार्य शर्त बताया। यह मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य है इसी को मोक्ष कहा जाता है। समाज तथा राज्य को इसमें बाधा डालने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने आध्यात्मिक स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए कहा कि इसको प्राप्त करने के लिए कर्म, उपासना और

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

ज्ञान तीन साधन होते हैं। सामाजिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता समानता पर आधारित है जो व्यक्ति को स्वतंत्रता की ओर ले जाती है और असमानता बन्धन की ओर ले जाती है। उन्होंने लिखा है –'' कोई भी मनुष्य और कोई भी राष्ट्र भौतिक समानता के बिना भौतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने का प्रयास नहीं कर सकता और न ही मानसिक समानता के बिना मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयास कर सकता है।''[2] स्वामी जी ने असमानता को अज्ञान और वासना के समान मानव के दुःख और कष्ट का प्रमुख कारण माना है। उन्होंने लिखा है कि असमानता मानव प्रकृति का पाप, समस्त मानव जाति पर एक श्राप तथा समस्त दुःखों का मूल है। परन्तु समानता निरपेक्ष रूप से लागू नहीं हो सकती क्योंकि यह प्रकृति के नियम के विरूद्ध है। इस संसार में सभी मनुष्य अलग अलग बुद्धि, कौशल और योग्यता लेकर आते हैं अतः जब तक यह दुनिया कायम है तब तक मनुष्यों में भेद रहेगें और पूर्ण समानता कभी प्राप्त नहीं हो सकती।[3] स्वामी जी का मानना था कि समानता के लिए संघर्ष अवश्य किया जाना चाहिए क्योंकि यह मानव विकास की एक प्रेरक शक्ति है। इसी तरह भ्रातृत्व के अभाव में स्वतंत्रता और समानता अधूरे मूल्य हैं। सच्चा जनतंत्र भ्रातृत्व से ही प्राप्त किया जा सकता है और भ्रातृत्व केवल आध्यात्मिक स्तर पर ही प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए स्वामी जी जाति–पाति, छूआछूत तथा साम्प्रदायिकता के खिलाफ थे। उन्होंने भारतीय समाज के पतन के कारणों की तलाश करते हुए कहा कि भारतीय समाज के पतन के कारण– छूआछूत, श्रद्धा का अभाव, पाश्चात्य संस्कृति का अभाव, बेईमानी, भौतिकवाद, भयग्रंथी, स्वयं को हीन मानना, मौलिकता तथा साहस की कमी, आलस्य, संकीर्ण दृष्टिकोण, धर्म की उपेक्षा, दुर्बलता और पीछड़ापन हैं।[4] स्वामी जी ने अस्पृश्यता और रूढिवादिता पर करारा प्रहार किया तथा उन्होंने रूढिवाद को रसोई धर्म तथा अस्पृश्यवाद कहकर उसकी आलोचना की। उन्होंने भारतीयों को खुली आंखों से दुनिया देखने की बात कही और प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया। उनके मन में गरीबों और दलितों के लिए असीम सहानुभूति थी। वे सबसे बड़े समाजवादी थे जो अमीर–गरीब के भेद को मिटाकर पद–दलितों को सीने से लगाना चाहते थे। उनकी ललकार थी कि गरीब और अभावग्रस्त , पीड़ित और पद–दलित, सब आओ, हम सब रामकृष्ण की शरण में एक हैं। उन्होंने कहा कि हम पूजा–पाठ के ताम–झाम को छोड़कर गांव–गांव में जाकर गरीबों की सेवा का बीड़ा उठायें। उन्होंने बाल विवाह का पूरजोर विरोध किया तथा स्त्री जाति के उद्धार के लिए महिला शिक्षा का समर्थन किया। उन्होंने ब्राह्मणवाद पर करारा प्रहार करते हुए कहा कि जिस रूप में भारत में जाति भेद जड़ें जमा चुका है उसे नष्ट करना बहुत जरूरी है। इसके लिए उन्होनें समाज सुधार आन्दोलन चलाने का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि सभी मनुष्य समान हैं और सभी को आध्यात्मिक अनुभूति तथा परम ज्ञान का अधिकार है। उन्होनें रामकृष्ण मिशन के माध्यम से समाज सुधार के कार्यक्रम को गति देने का कार्य किया जो धीरे–धीरे सम्पूर्ण भारत में एक प्रसिद्ध सामाजिक संस्था बन चुकी थी।

रामकृष्ण मिशन के उद्देश्य

इस संस्था की स्थापना के निम्नलिखित उद्देश्य थेः–

1. ''हिन्दू धर्म में हिन्दुओं की फिर से आस्था जागृत करना।
2. अपनी संस्कृति की प्राचीनता व इतिहास की महानता का ज्ञान कराना।
3. सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् पर आधारित मानव सेवा।
4. शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबों की सहायता।
5. राष्ट्रभक्ति, आत्मविश्वास की चेतना, युवा शक्ति पर विश्वास, युवाओं में आत्मविश्वास की भावन जागृत करना।[5]

स्वामी विवेकानंद के चिन्तन की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता–

1. वेदांत के आधार पर सार्वदेशिक दर्शन का विकास :– स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन का आधार वेदान्त की शिक्षाएँ थी लेकिन उन्होंने पाश्चात्य दर्शन का भी अध्ययन किया व पूर्व व पश्चिम संस्कृति के समन्वय पर बल दिया।[6] भारत के आध्यात्मवाद का प्रचार–प्रसार विदेशों में भी किया।वर्तमान में भी न्याय, समानता, स्वतंत्रता, धर्म निरपेक्षता भारत के संविधान के मूल तत्व हैं। राष्ट्र में फैली असमानता, हिंसा, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में उनकी शिक्षाओं का आज भी महत्व बना हुआ है।देश में आज भौतिकवाद के कारण मानव मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है। समाज में तनाव, हिंसा, महिलाओं पर अत्याचार, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। हम अपनी प्राचीन संस्कृति से मुंह मोह मोड़ रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है। इसलिए स्वामी विवेकानन्द के मूल चिन्तन, भौतिकवाद व आध्यात्मिकवाद के समन्वय की आज जरूरत महसूस हो रही है।

2. धर्म को मनुष्य की आन्तरिक अनुभूति बताना :– स्वामी जी धर्म को व्यक्तिगत अनुभूति मानते थे। यहलौकिक उद्देश्यों के लिए धर्म के इस्तेमाल पर जोर दिया। अतः उनकी अन्तः प्रेरणा मानवतावादी थी। उनकी ये शिक्षा भी आज जरूरी हो गई है। अनेक सम्प्रदायों के बीच साम्प्रदायिक तनावों के कारण आज धर्म की सरल व्याख्या जरूरी है। इसलिए उनकी शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं।स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, ''तुम्हारी भक्ति और मुक्ति की परवाह किसे है, कौन इसकी परवाह करता है कि तुम्हारे धर्म–ग्रंथ क्या कहते हैं ? मैं बड़ी खुशी से एक हजार बार नरक जाने को तैयार हूँ, अगर इससे मैं अपने देशवासियों को ऊँचा उठा सकूँ।[7]एक ईश्वर, न्याय, अहिंसा, दया, मानव, बन्धुता, समानता, मानवता, सत्य आदि तत्वों को मानव कल्याण के लिए आवश्यक माना ।

3. मानव कल्याण :– विवेकानन्द ने मानव सेवा पर बल दिया। शिक्षा–स्वास्थ्य व मानव कल्याण के लिए अनेक कार्य किया। उनके अनुसार ''ईश्वर की पूजा मानवता की सेवा द्वारा ही की जा सकती है।''[8]इसलिए उनके ये विचार आज भी प्रासंगिक हैं। देश में आज भी आज भी अशिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, भूखमरी, पोषण, भ्रष्टाचार आदि अनेक

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

समस्याएँ बनी हुई है।सभी व्यक्तियों को शिक्षा देना, स्वास्थ्य सेवाओं को जुटाना आज प्राथमिकता होनी चाहिए जिसके लिए सरकारी संस्थाएँ कार्य कर रही हैं।

4. राष्ट्रभक्ति :– स्वामी विवेकानन्द एक महान देशभक्त थे। उन्होंने अपने लेखों व भाषणों से लोगों में नवीन आत्मगौरव की भावना जगाई व भारतीय संस्कृति में नया विश्वास तथा भारत के उज्जवल भविष्य के लिए कार्य किया।वर्तमान में भी राष्ट्रीय एकता तथा देश के सर्वांगिण विकास के लिए राष्ट्रभक्ति की भावना अनिवार्य है। आत्मविश्वास व मेहनत से ही देश तरक्की कर सकता है। इसलिए स्वामी विवेकानन्द के विचार आज भी प्रासंगिक है।

5. नौजवानों की शक्ति पर विश्वास :– स्वामी विवेकानन्द ने अपने भाषणों व लेखों द्वारा भारत की युवा पीढ़ी का आह्वान किया कि वे देश की समृद्धि, विकास व कल्याण के लिए कार्य करें। इस तरह उन्होंने युवा पीढ़ी में मेहनत, आत्मविश्वास व आत्मबल की प्रेरणा दी।आज के सन्दर्भ में युवा शक्ति का राष्ट्र के विकास में अहम योगदान माना जाता है। उनकी शिक्षा, कुशलता द्वारा ही राष्ट्र की उन्नति संभव है। अतः स्वामी विवेकानन्द के उपर्युक्त विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

6. वैश्वीकरण व उदारवाद पर जोर :– उन्होंने भारत के लोगों को विश्व के अन्य देशों के ज्ञान–विज्ञान व अच्छी बातों को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने भारतीयों की कि आलोचना की है कि वे बाकी दुनिया से कट कर जड़ व मृतप्राय हो गये है।[9]उनकी ये शिक्षा भी आज के सन्दर्भ में प्रासंगिक हैं। आज का दौर वैश्वीकरण का दौर है। भारतीय आज दूसरे देशों में अपना कुशलता का लोहा मनवा रहे हैं तथा देश के अन्दर भी अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

7. गरीबी के प्रति पीड़ा :– स्वामी विवेकानन्द को निर्धन लोगों के प्रति न केवल सहानुभूति थी अपितु वे गरीबी को मानवता के खिलाफ पाप मानते थे। इसलिए उन्होंने कहा कि,''जब तक लाखों लोग भूख तथा अज्ञान का जीवन व्यतीत करते हैं, मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को देशद्रोही मानता हूँ, जिसने विद्या तथा ज्ञान तो उनके व्यय पर प्राप्त किया है और अब उनकी रत्ती भी भी प्रवाह नहीं करता।[10] आज के सन्दर्भ में भी उनके ये विचार प्रासंगिक हैं। देश में आज भी लोग भूख से मर रहे हैं। बच्चे कुपोषण का शिकार हैं। देश में गरीबी मिटाने के अनेक कार्यक्रमों व योजनाओं के बावजूद आज भी गरीबी बनी हुई है। अतः सबसे पहले देश में भूखमरी व गरीबी को मिटाना प्रत्येक व्यक्ति का पहला कर्त्तव्य बनता है। इसलिए स्वामी विवेकानन्द के विचार आज प्रासंगिक हैं।

सारांश

स्वामी विवेकानन्द ने देशवासियों को आत्मा–सम्मान, शान्ति, निर्भयता व मानव गौरव की प्रेरणा दी। वेदांत का प्रचार, प्रेम, विश्वबन्धुत्व पर बल दिया। समाज सेवा को प्रथम कार्य माना। उनकी इन शिक्षाओं व कार्यों के कारण भारत निरन्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है। वर्तमान में जो कुछ समस्याएँ व बाधाएँ हैं उनको दूर करने में उनके चिन्तन से लगातार प्रेरणा मिलती है। आज युवा शक्ति, ज्ञान शक्ति को इस युग में स्वामी विवेकानन्द हमारे बीच अपने औजस्वी विचारों के कारण हमारे बीच बने हुए हैं।

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

- रामरत्न एवं रूचि त्यागी, भारतीय राजनीतिक चिन्तन, मयूर पेपर बैक्स, 2003. पृ0 186.
- कमप्लीट वर्क ऑफ स्वामी विवेकानन्द, वॉल्यूम 6, पृ0 382.
- योगेश कुमार शर्मा , भारतीय राजनीतिक चिन्तक, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2001, पृ0 23.
- अमरेश्वर अवस्थी एवं रामकुमार अवस्थी, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004, पृ0 123.
- एस. एल. नागोरी, प्राचीन भारतीय चिंतन, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, पृ0 272.
- बी. एल. ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चन्द एण्ड कम्पनी, पृ0 276
- विपिन चन्द्र एवं मृदुला मुखर्जी, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1990, पृ0 47
- सुमित सरकार, आधुनिक भारत (1885–1947), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृ0 91.
- विपिन चन्द्र, आधुनिक भारत के नेतृत्व में, संपादन मण्डल, 1971, पृ0 153.
- प्रताप सिंह, आधुनिक भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, जयपुर, 1997.

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org